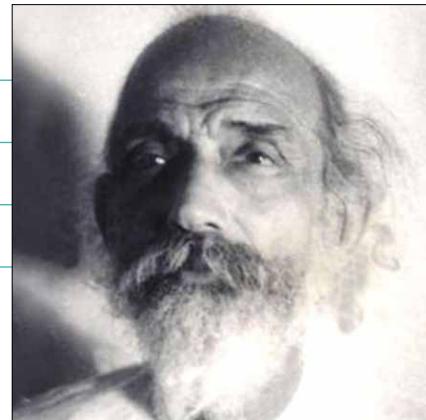


हमारे साहित्यकार: राजर्षि टंडन

जन्म: 1 अगस्त, 1882, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश

निधन: 1 जुलाई, 1962

कार्य: स्वतंत्रता सेनानी



पुरुषोत्तम दास टंडन एक भारतीय स्वतन्त्रता सेनानी, राजनेत्री, हिन्दी भाषा के सेवक, पत्रकार, वक्ता और समाज सुधारक थे। अपने निजी जीवन में सादगी अपनाने के कारण उन्हें राजर्षि उपनाम से प्रसिद्ध प्राप्त हुई। हिन्दी को देश की राजभाषा का स्थान दिलाने में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा। उन्होंने सन् 1910 में 'नागरी प्रचारिणी सभा', वाराणसी, में 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' की स्थापना की। स्वाधीनता आनंदोलन के दौरान वे कई बार जेल भी गए। वे 13 साल तक यूनाइटेड प्रोविंस विधान सभा के अध्यक्ष भी रहे। स्वाधीनता आनंदोलन के साथ-साथ वे कृषक आंदोलनों से भी जुड़े थे। आजादी के बाद वे लोक सभा व राज्य सभा के लिए चुने गए। पुरुषोत्तम दास टंडन को सन् 1961 में भारत के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया।

प्रारंभिक जीवन

पुरुषोत्तम दास टंडन का जन्म 1 अगस्त, 1882 को उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद शहर में हुआ था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा इलाहाबाद स्थित सिटी एंगल वर्नाक्यूलर स्कूल में हुई। सन् 1894 में उन्होंने इसी स्कूल से मिडिल की परीक्षा उत्तीर्ण की। हाई स्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद उनका विवाह मुरादाबाद निवासी चन्द्रमुखी देवी के साथ करा दिया गया।

राजनैतिक जीवन

सन् 1905 में उनके राजनीतिक जीवन का प्रारंभ हुआ जब बंगाल विभाजन के विरोध में समूचे देश में आनंदोलन हो रहा था। बंगभंग आनंदोलन के दौरान उन्होंने स्वदेशी अपनाने का प्रण किया और विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार प्रारंभ किया।

अपने विद्यार्थी जीवन में ही सन् 1899 में वे कांग्रेस पार्टी का सदस्य बन गए थे। सन् 1906 में उन्होंने अखिल भारतीय कांग्रेस समिति में इलाहाबाद का प्रतिनिधित्व किया। कांग्रेस पार्टी ने जलियाँवालाबाग कांड के जांच के लिए जो समिति बनाया था उसमें पुरुषोत्तम दास टंडन भी शामिल थे। वे 'लोक सेवक संघ' का भी हिस्सा रहे थे। 1920

और 1930 के दशक में उन्होंने असहयोग आनंदोलन और नमक सत्याग्रह में भाग लिया और जेल गए। सन् 1931 में गाँधी जी के लन्दन गोलमेज सम्मलेन से वापस आने से पहले गिरफ्तार किये गए नेताओं में जवाहरलाल नेहरू की साथ-साथ वे भी थे।

पुरुषोत्तम दास टंडन कृषक आंदोलनों से भी जुड़े रहे और सन् 1934 में बिहार प्रादेशिक किसान सभा का अध्यक्ष भी रहे। वे लाला लाजपत राय द्वारा स्थापित 'लोक सेवा मंडल' के भी अध्यक्ष रहे।

वे यूनाइटेड प्रोविंस (आधुनिक उत्तर प्रदेश) की विधान सभा के 13 साल (1937-1950) तक अध्यक्ष रहे। उन्हें सन् 1946 में भारत की संविधान सभा में भी सम्मिलित किया गया।

आजादी के बाद सन् 1948 में उन्होंने कांग्रेस अध्यक्ष पद के लिए पट्टाभि सीतारामैया के विरुद्ध चुनाव लड़ा पर हार गए। सन् 1950 में उन्होंने आचार्य जे.बी. कृपलानी को हराकर कांग्रेस अध्यक्ष पद हासिल किया पर प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के साथ वैचारिक मतभेद के कारण उन्होंने कांग्रेस अध्यक्ष पद से त्यागपत्र दे दिया।

सन् 1952 में वे लोक सभा और सन् 1956 में राज्य सभा के लिए चुने गए। इसके बाद खराब स्वास्थ्य के चलते उन्होंने सक्रिय सार्वजनिक जीवन से संन्यास ले लिया। सन् 1961 में भारत सरकार ने उन्हें देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' से सम्मानित किया।

हिन्दी के समर्थक

हिन्दी को राष्ट्रभाषा का दर्जा दिलाने में राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन का बड़ा योगदान था। 'हिन्दी प्रचार सभाओं' के माध्यम से उन्होंने हिन्दी को अग्र स्थान दिलाया। गाँधी और दूसरे नेता 'हिन्दुस्तानी' (उर्दू और हिन्दी का मिश्रण) को राष्ट्रभाषा बनाना चाहते थे पर उन्होंने देवनागरी लिपि के प्रयोग पर बल दिया और हिन्दी में उर्दू लिपि और अरबी-पारसी शब्दों के प्रयोग का भी विरोध किया।